कभी चाहत के मौसम में

मुकेश शर्मा 'मुकेश'

प्रकाशक :
कलासन प्रकाशन
मार्डन मार्केट, बीकानेर–334 001



कलासन प्रकाशन
बीकानेर (राज.)

कभी चाहत के मौसम में

मुकेश शर्मा 'मुकेश'

ISBN 81-86842-65-9

कृति	:	कभी चाहत के मौसम मे
कृतिकार	:	मुकेश शर्मा 'मुकेश'
आवरण	.	मुकेश शर्मा
सस्करण	.	2002
मूल्य		नब्बे रुपये मात्र
लेजर टाईप सेटिंग	.	आचार्य ग्राफिक्स, बीकानेर
मुद्रक	.	कल्याणी प्रिंटर्स,
		मालगोदाम रोड, बीकानेर–334001

KABHI CHAAHAT KE MAUSAM MEIN (POETRY)

By : Mukesh Sharma "Mukesh"

Rs. 90.00

सादर समर्पित



आदरणीय पापा स्व. पंडित रामकिशन शर्मा 'साईल देहलवी' की स्मृति में उन्हीं के लाडले 'तोते', 'गब्बा साईल' उर्फ 'बबलू' उर्फ मुकेश शर्मा 'मुकेश' का रचनाकर्म

स्नेही पाठक,

न जाने कब ? जीवन के न जाने किस विलक्षण पल मे? अपने बचपन से जुदा होकर कैशोर्य मे कदम रखते हुए मैंने कई सपनों को आपकी तरह ही देखना–आँखो मे पालना शुरू कर दिया था

–सपने जिनमे केवल मैं और मेरी दुनिया थी,

–सपने, जिनमे न जाने कैसी–कैसी बाते, चाहते–राते–मुलाकाते और बरसाते थीं,

–सपने, जिनमे थे– मैं और मेरे अपने जाने–पहचाने, अनजाने–बेगाने लोग

–सपने, जिनमे परिकल्पित होकर, न जाने कैसी–कैसी स्थितियों मे रहकर, जी–कर, सजाकर, मुस्कराकर, खुद को खुश कर लिया करता था मैं।

इन्ही सपनो मे न जाने कब साकार हो उठी मेरे मानस–गर्भ की रचनाएं मेरी प्रेमिकाए, चद प्यारी कविताए।

वैसे तो कविता के बारे मे मेरा मानना है कि किसी भी रचनाकार की अनुभूति की कलामयी अभिव्यक्ति ही साहित्य है व उस साहित्य मे जब भावना का आधिक्य हो जाता है, तब उसी का नाम कविता हो जाता है। भाषा के भीतर जो अनुभूति है, भाषा के बाहर वही कर्म है। कविता इन दोनों की सधि पर है। कविता सच्ची बनती है भाषा के भीतर की अनुभूति से, और बडी बनती है भाषा के बाहर के कर्म से। बौने जीवन से, बडी कविता पैदा नहीं होती। कविता सीधा–सीधा कर्म नहीं, पर हमने जीवन मे कर्म की जो दिशाएं खोजी हैं, उनका वह फलक है, कविता की नब्ज को छूकर, हम, महसूस कर सकते हैं कि उसमे हमारा कितना रक्त कितने ताप और दबाव व प्रवाह के साथ दौड रहा है। मैं समझता हूँ कि कविता एक अतश्चेतना है जो पहाडी झरने की तरह रग–रग से फूटती है, जिस प्रकार वर्षा का जल, पहाड की आत्मा मे मिलता है और फिर वनस्पतियो–खनिजो की सुगध लेकर झरने का रूप धारण करता है ठीक उसी प्रकार, खुली आंखो से एक–एक ब्यौरे मे गहराई तक जाना, उसे अतर मे गहराई तक रचा–पचा लेना और फिर समय की साधना मे झरने की तरह फूटना ही मैंने सीखा है। यह झरना कैसी–कैसी रचनाओ को जन्म दे गया है, इसका तो मुझे पता नहीं, पर रूप–रस–गंध–स्पर्श मे डूबी रचना को जब मैंने रगरेज की भाति धुपहले परिवेश मे सुखाने के लिए फैलाया है तो न जाने कैसे–कैसे वधेज उभर कर मुझे मोहित कर गए हैं।

मैं जब कभी एकात मे, मूल्याकन करता हूँ तब लगता है कि मेरे मन मे कोमल भावनाए अकुरित हो रही हैं और फिर मैं, स्वत ही लिख पडता हू किन्तु फिर, कभी–कभी पाता हू कि ऐसा क्यो होता है ? कि हम निरर्थक होते भी किसी से जुडे रहने की चाह अपने भीतर सजोये रहते हैं ?

या फिर श्रद्धेय श्री त्रिलोचन के शब्दो मे

'क्या जाने ? कौन राग ? छाती मे लगता है अकुलाने
इन्द्रधनुष–सी लहराती है पत्ती–पत्ती,
बिना बुलाये जो आता है, प्यार वही है,
प्राणो की धारा, उसमे, चुपचाप बही है।

यह प्रेम, प्रीत, प्यार ,मेरी दृष्टि में मनुष्य का एक स्वाभाविक और बडा गहरा अनुभव है। इस पर लिखी हुई कविता बडी महत्त्वपूर्ण और सुदर, कलात्मक हो सकती है और होनी चाहिए। असल मे तो प्रेम एक जादुई एहसास है, एक मदभरी

अनुभूति, शरीर मे गूंजता अनहदनाद। प्यार जिंदगी का हरापन है–नस–नस मे खिलखिलाता वसंत–एक रंगीन बेचैनी, एक थरथराने वाला एहसास। ठीक ऐसे ही सौन्दर्य है अगर सौन्दर्य न हो तो आप और हम गूगे की तरह मर जाएगे, कोई पता नही चलेगा। सौन्दर्य चेतना की सृष्टि है, यह हमे प्रकृति नहीं देती, प्रकृति मे दृश्य देखकर फिर हम, चेतना मे उसे 'रि–क्रिएट' अर्थात् पुनर्सरंचित करते हैं, हम उसे स्थापत्य देते हैं, एक नई सृष्टि देते हैं मानव की सृष्टि। कविता की सृष्टि–सबसे बडी सृष्टि है, और यह कभी नाश न होने वाली सृष्टि है, अगर हम स्वय यह सृष्टि बन ले तो क्या कहना है?

बचपन मे ही कविता और सगीत से लबालब एक घरेलू परिवेश मे जीवन बिताने का सौभाग्य मुझे मिला। पापाजी, **(स्व पंडित रामकिशन शर्मा 'साईल देहलवी')** को शायरी मे दिलचस्पी थी, अपनी गजलो–नज्मो को वे गुनगुनाते रहते थे, उनकी आवाज और शायरी का पहला श्रोता मै ही हुआ करता था। मुशायरो मे, कवि–सम्मेलनो मे उनकी शिरकत तथा गरजदार सयोजित प्रस्तुतियो से तूफान उठाने का होसला, दाद न देने वाले सकुचित दिलो से भी दाद ले लेने का उनका पराक्रम देखकर उन जैसा नही, तो कम से कम, उनके रास्ते पर चलने की प्रेरणा अवश्य मिली। ऐसे मे, मैंने भी लिखना शुरू कर दिया। मेरे साथ जब–जब और जिस किसी परिचय, मिलन, मित्रता, सग, साहचर्य से, कोई घटना घटी है या उसके साथ मेरा कोई न कोई प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष संबध बना है तो मैंने उसी को लिखा है। अब तक के जीवन मे जो–जो भी सुन्दर चित्र, दृश्य, लडकियॉ, लोग मुझे मुग्ध कर सके हैं, जिन्हे देखकर मैं खुद को भी कभी–कभी भूल गया हूँ उन्ही मे से कुछ इस प्रथम सकलन **'कभी चाहत के मौसम में'** विद्यमान है, प्रवहमान हैं। मैं यह मानता हूं कि **'सब–कुछ कह देने के बाद भी, कुछ रह जाता है जो केवल मन में महसूस किया जाता है और कविता यही महसूस कराने का कार्य करती है।'** नाजिम हिकमत ने कविता के सौन्दर्य की तुलना, नारी देह के गठन के सोन्दर्य से की है। नारी का सौन्दर्य क्यो अनुपम होता है? क्यो वह पुरुष को ही विस्मय–विमुग्ध करता है? क्यो नारी अपने गठन में, आईने की तरह साफ होती है? इन सवालो का जवाब है–**नरेन्द्र शर्मा, शमशेर और अज्ञेय** की प्रेम कविताए, रूसी कवि **पुश्किन** की प्रेम/सौन्दर्य कविताओं का हिन्दी अनुवाद, अनेक पाठको को तरगित कर चुका है, **पाब्लोनेरूदा** और **फैज अहमद फैज** की प्रेम कविताओ के सहृदय पाठक इस प्रेम को खूब जानते हैं। महाप्राण 'निराला' के बाद जो भी वास्तविक प्रेमी, कवि रहे हैं उनकी कविता में नारी का सुडौल बदन एक आबशार (जल–प्रपात/झरना) रहा है।

कहीं पढा था कि अगर मर्द अपनी ऑखो और आवाज से औरत को छू नहीं पाता.,तो फिर वह उसको छू कर भी अनछुआ रखता है। मैंने अपनी आँखो और दिल की आवाज से, किसे कितना छुआ है? यह तो मेरे पाठक ही बता सकेंगे पर, **'कभी चाहत के मौसम मे'** मैंने, प्रेम व सौन्दर्य पर केन्द्रित अपनी अलग–अलग सखियों पर, उनको आधार बनाकर, विभिन्न क्षणो को जीते हुए, मानस मे तैरने–उभरने वाली तरगों को, शब्दो के माध्यम से देखा–सजोया है–इस सत्य को कहने, सुनने व स्वीकारने में, मैं कतई सकोच नहीं करूंगा।

यही नहीं **'कभी चाहत के मौसम मे'** प्रेम की ये कविताए, उसी संवेदना का विस्तार–विकास हैं, जहा आत्म–समर्पण के क्षणों मे, फूट–फूट कर रोने वाली प्रिया के होने, न होने का दुख, उसको पिघल कर गले से, अग से लगा लेने की पावन चाहना मुझ तक, मेरे मानस तक पहुचती रही है।

छत्तीस बरस की उम्र मे आज, आपको सोलह बरस के 'मुकेश' की अनकही रचनाए सौंप रहा हूँ हालांकि मेरा 'आज' और 'वर्तमान' बहुत ही कडवा–खारा–जहरीला है जिसे कोई पढते हुए पी नही सकेगा पर सोलह बरस की वय के 'मुकेश' ने जो मासूम ख्वाब सजाये थे, उन गुलाबो की महक आप तक बीस बरस बाद ही सही, किसी तरह पहुच तो जाए, यही साहस अपनी थकी हुई साँसो और आँखो के गर्म यकायक ही छलछला उठने वाले लावे के बीच मे धीमे–धीमे जुटाता रहा।

मैं समझता हूँ कि मेरे सोचने, विचारने, बोलने और लिखने पर तो मेरा अपना अधिकार है और मैं इस विषय मे पूर्ण स्वतत्र हूँ, भले ही

– मेरे परिचित मित्र मेरा मजाक बनाए,

– मेरे घरवालो को मेरा लेखन/सृजन अच्छा लगे या न लगे,

– आस–पडोस, गली–मुहल्ला, समाज मुझे सदेह से देखे,

– मेरे परिचय की लडकिया, इससे नाराज हो कि मेरी कविताओ में उनका उल्लेख क्यू है?

– मेरे कुछ विशिष्ट और आत्मीय साथी मेरे लेखन से सहमति रखते हों या न रखते हो,

–मुझे चरित्रहीन, लुच्चा, लफगा, आवारा और भी बहुत कुछ, तुच्छ या जो कुछ भी सोचा, समझा, जाना, पहचाना, सम्बोधित, प्रचारित माना जाए या सभी मेरे खिलाफ हो जाए, जिनमें गैर ही नहीं, मेरे अपने भी ऐसे लोग शामिल हो, जो कल तक मेरे खास बनकर रहा करते थे।

मुझे कोई फर्क नही पडता, सबसे पहले मै इन्सान हूँ और फिर, लेखक, कवि या कुछ और जो भी मेरी प्रेरणा है, उससे इन्कार नही है मुझे। आने वाले कल को, यदि मैं इन रचनाओ की वजह से कोई विशिष्ट प्रशंसा, मान–सम्मान या पहचान प्राप्त करता हूँ, तो मुझे हर उस शख्स की याद आएगी, जिसके सान्निध्य और साहचर्य से मेरे जीवन के तमाम लम्हे, जज्बात और लफ्ज की शक्ल मे ढलकर, मेरी 'रचना' के रूप मे जन्मे।

जीवन को जैसे–तैसे जीते हुए, तमाम दु:खो–अभावो–और झंझावातो से गुजरते हुए, बराबर अपने आपको जिन्दा रखते हुए, जो कुछ भी लिख पाया हूँ वही गुलाब से ख्वाब आप तक लाया हूँ।

मैं शुक्रगुजार हूँ मेरे अजीज मित्र स्व श्री निखिल गुप्ता (पूर्व कपीयर, युववाणी, आकाशवाणी, बीकानेर)श्री महेन्द्र तिवारी (कवि–लेखक/अभिनेता–निर्देशक, टीवी सीरियल, जयपुर पी डब्लू डी मे कार्यरत) श्री राजेशकुमार व्यास (सू ज अधिकारी, बीकानेर), श्री हिगलाज रतनू, श्री आलोक चतुर्वेदी, श्री मुकेश व्यास, सुश्री मन्दाकिनी जोशी (रगकर्मी/उद्घोषिका, आकाशवाणी, बीकानेर), श्रीमती मजू–दीपक जैन (चूरू–फिरोजपुर) श्रीमती कविता–गजेन्द्र वर्मा और अखिल गुप्ता (एम बी ए) का जो पिछले कई बरसो मे, जब–जब मुझे मिलते, सदैव रचना प्रकाशन हेतु निरतर टोकते–झिडकते और मीठे–मीठे डाटते रहे...।

मुझे सहेजने के लिए विशेष आभारी हूँ, भाई श्री मनमोहन कल्याणी, डॉ. मदन सैनी, का जिन्होंने मुद्रणार्थ मार्ग निर्देशन किया।

आइए, आप सबको ले चलूं, 'कभी चाहत के मौसम में...'

आपका
मुकेश शर्मा 'मुकेश'

पाठकीय कथन

मैं एक शब्द–कर्मी के पहले रचना–ससार की यात्रा से लौटकर देखे गए पर अपनी प्रतिक्रिया लिखने बैठा हूँ, मुझे मुकेश शर्मा के इस ससार मे हर गली, हर मोड, हर चौराहे–तिराहे एक, केवल एक ही रग, कहीं गहरा तो कहीं वही निरा हल्का दिखा है। लिखते–लिखते ही मेरे भीतर का जिज्ञासु मुझे थामता हुआ पूछने लगता है–तुम जिस पहले रचना–ससार के साक्षी बने हो, उसमे तुम्हे एक ही रग हल्के–गहरे रूप मे क्यों दिखा? क्या इस रचना–ससार के आस–पास के ससार के रगों की छाया या छींटा क्यों नहीं दिखा? या फिर यह बता कि अपने पहले रचना–ससार के इस रचयिता ने अपने आस–पास के रगो से परहेज करते हुए एक, केवल एक अपने ही रग में यह ससार रच कर तुम्हारे और अपने शहर–ससार के पाठक के सामने रखने का पहला प्रयत्न क्यों किया?

मैं अपने साख्य को शब्दों में लिखू, उससे पहले तो इस ससार के रचयिता का अपना वक्तव्य ही मेरे सामने आ खडा होता है उसे अपना यह ससार दिखाने में कोई सकोच नहीं है, वह अपने इस संसार के साथ चौराहे पर खडा हो जाने का गहरा इच्छुक है।

चूकि मुकेश का यह ससार मेरे सामने सवाद के पेटे नहीं, मेरे पाठक के सामने उपस्थित है, तब शब्द–रचना के पहले ससार को देखने के बाद, लिखने के अपने लिखारू को भी सकोचना पड़ता है, जब मुकेश कहते हैं–

'तुमको देखा तो यह जाना कि कोई शब्द कुछ भी न था '

'मैंने छद की तरह तुमको, मेरे सृजन में देखा है '

मुकेश का यह आशय कहीं–कहीं बहुत स्थूल रूप में इस रचना–ससार में है, कहीं उथले दर्द, उथली उसासों–घुटन में प्रकट हुआ है, तो कहीं गहराने का यत्न भी छलकता है।

भावावेग के इस–उस तरह उछालों को देखने के बाद शब्दकर्मी के पहले रचना ससार पर यही कहूँ, कि उम्र के एक मोड पर सवेदना इसी तरह का ससार रचा करती है। आने वाले प्रभावों को भाप कर आगे बढ जाने की इच्छा, मैं मुकेश के इस पहले रचना–ससार मे खोजने की चेष्टा करने लगा, तो मुझे, उम्र और समझ के पेटे ठहर–ठहर के देखना पडा, मुझ से तेज तर्रार पाठक, जो हैं ही, उनसे छूट जाए, पर मुझसे न छूटे, पकड पाने की चेष्टा मे मुझे मुकेश के इस पहले रचना–संसार में–

'जिन्दगी तुम से बात करनी थी..'

या फिर 'दुनिया को भीड की बीमारी हो गई..'

या फिर 'इक दिन' में, मुकेश अपने ही ससार को शब्द के माध्यम मे दूसरे–दूसरे रगो में देखते लगे।

मुकेश ने अपने शब्द कर्म को जिस रूप मे रचना कर्म के निष्णात साधकों के सामने रखा, उनके लिखे शब्दो की छाया में, मैं तो इतना ही कहना चाहूँगा कि वह भावावेग की यात्रा करता हुआ अनुभव के गहरे राग तक पहुँचे और अपने कथ्य अपने शिल्प और अपनी भाषा को अपने आज के समय से जोडे

–अपने पिताश्री से जो उसे मिला है,

–उसे अपने जीवन से, जो जितना कडवा मिला है

–उसे अपने आज के, अनुभव–राग में घोले,

इसी मगल कामना के साथ, मुझे उस के अगले पडाव का साक्षी बनने की प्रतीक्षा है।

हरीशभादानी

–हरीश भादाणी



प्रिय 'मुकेश'   और भी अच्छा लिखते रहो

(आशा भोंसले)



It is nice to know that young people like Mukesh Sharma 'Mukesh' are not only interested in poetry, but writing too ... My best wishes are with him.

(Javed Akhtar)

अनुक्रमणिका

गुलनार

बरसो पहले
न जाने कब, अचानक
किसी दिन, किसी वार
हो गया– 'प्यार'
भीड थी बहुत परिचितों की, पर
लिख गया कोई
नजर के रास्ते दिल पे मेरे
बेचैन दिल का हाल
बहुत बाद मे पता चला, यही तो था
जो कह गया, कि मैं हू सोलहवा साल,
भरी दुनिया मे इक लडकी,
कली–सी खिल गई, उस दिन
हवा ने चूमकर जिसको
बनाया सुंदर यह ससार
सिखाया– बिन बोले कहना
जताना, दिल मे धडकता प्यार
गुलो ने रगो–खुशबू दी,
घटा ने मस्तिया भर दी
जिस्म मे ऑच यू भर दी
गर्म कुछ सरदियॉ कर दी

कि बोला दीवाना मोसम–
'तुम्ही तो हो– मेरी गुलनार
तुम्ही से, है मेरी दुनिया
तुम्ही हो, मेरा पहला प्यार'
बरसो पहले, इसी तरह ही
एक दिन– बस एक बार
हुआ था, पहला प्यार
लगी थी सुदर, यह दुनिया
लगा सुदर है ससार।

-

तुमको देखा तो जाना

मेरे लिए, शब्द से बढ कर,
दुनिया मे, कुछ भी न था
तुमको देखा, तो यह जाना,
कि कोई शब्द, कुछ भी न था
अब तक तो, पता यही था कि
बोला करते हैं.. शब्द सभी
पर, शब्द से बढ कर भी, कुछ है
जो आख मे तेरी, मै पाता
मेरे लिए, शब्द से बढ कर,
दुनिया मे, कुछ भी न था
तुमको देखा, तो यह जाना
कि कोई शब्द, कुछ भी न था
अनबोले–से, उन बोलो को
मैं सुनकर हूँ, बस मुग्ध हुआ
उमडा आता है, अतर मे
छाती मे, प्यार है अकुलाता
मेरे लिए, शब्द से बढकर
दुनिया मे, कुछ भी न था
तुमको देखा, तो यह जाना
कि कोई शब्द, कुछ भी न था।

मैं प्यार करता हूँ

मैं प्यार करता हूँ उसे
यह कहने मे मुझे, डर क्यू लगता है
मैं क्यू नही कह पाता उस से
कि मै प्यार करता हूँ उसे
जबकि इस गौरव मे तो—'मैं',
अपने 'स्व' को सजोता रहता हूँ,
बिखरते रहने की टूटन मे, खुद को सहेजे
और स्नेह की साँसे पाले
मन—चक्षु प्रक्षालन करता, पीडा को अपनाता हूँ
और दु खती आह से गाता हूँ,
एक सागर—सा लहराता हूँ,
सावन—सा उमडता जाता हूँ,
यू ही उसकी याद समेटे,
जीता हूं, डरता हूँ
बार—बार मरता हूँ
सच, मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ .।

एक चेहरा मेरी निगाह में

एक सुन्दर–सा और कोमल–सा चेहरा मेरी निगाह मे है
दर्द उसी का, प्यार उसी का, हाँ,– बस मेरी चाह में है
उसके भी दिल पर है दस्तक, मेरी धडकती साँसो की,
जाने है, वो शख्स भी यह.. के कोई उसकी राह मे है
जबसे पडी है जख्मे–जिगर पर, उसकी वो पहली–सी नजर
दर्द कोई मीठा–मीठा–सा, उभरा मेरी कराह मे है
हाँ यह हकीकत है या नही, पर लगता है कुछ–कुछ ऐसा
देखना उसको ही लगता है, शामिल मेरे गुनाह मे है
उसकी यादें– उसकी बाते, उसके ख्वाब–खयाल लिये
तन्हा–तन्हा फिरता हूँ मैं, दिल तो उसकी पनाह में है!

सचमुच

ऑखो मे स्वप्न
स्वप्न मे कविता
कविता मे .मन्दाक्रान्ता छन्द
मैने.. छन्द की तरहा. तुमको
मेरे.. सृजन मे. देखा है

तन्हा...जीवन
फिर, तुम से .मिलन,
तुम .तक. जा कर है रस्ता बद
मैंने. .बद हुआ--सा. .खुद...को
तेरे हृदय मे...देखा है

क्या...सच है, क्या झूठ ?...
सुनो तो,. .पूछो...तुम ..
अपने दिल से...
मै ..निरा शब्द--चितेरा. तेरा ..
शब्द ही...मेरी सीमा--रेखा है

ऑखो मे स्वप्न
स्वप्न मे कविता
कविता मे...मन्दाक्रान्ता छन्द
मैने...छन्द की तरहा .तुमको
मेरे...सृजन मे. देखा है
सचमुच .
सृजन मे देखा है।

अलग थी शख्सियत मेरी

अलग थी शख्सियत मेरी, अलग ही मैं चमकता था,
ये क्या मुझको हुआ है? जब से तेरे पास आया हूँ
मेरी पहचान है अब तू, तेरी पहचान हूँ अब मै,
कसम से माजरा यह मैं, नहीं कुछ समझ पाया हूँ
न कोई कुछ बताता है, न कुछ भी मुझको भाता है
अजब इक मर्ज चाहत का, कहाँ से जाने लाया हूँ
कोई अनजान–सा रिश्ता, मुझे तुझ तक ले आता है
मैं खुद भी, खुद–ब–खुद बढ़ कर के चलता तुझ तक आया हूँ
मेरे दिल मे बसी है तू, तेरे दिल मे धडकता मैं
जिस्म दो, एक–जाँ हैं हम, मैं तेरा ही तो साया हूँ
मेरे लफ्जो में शामिल तू, तेरी बातो का हिस्सा मैं
तुझी पर लिख के मै गजले, तुझी को गुनगुनाया हूँ
मिली है नजरे जब तुझसे, ये सच है बस, उसी पल से
मेरा चेहरा गुलाबी है, तुझे मैं जब से भाया हूँ
अकेले मे कभी तुझको, याद क्या मेरी आती है ?
बताना तू मुझे सब–कुछ, समझना मत, पराया हूँ
अलग थी शख्सियत मेरी, अलग ही मैं चमकता था
ये क्या मुझको हुआ है जब से तेरे पास आया हूँ !

कभी न बोली

कभी न बोली मुख से तुम, पर जाने क्यूं लगता ऐसा
बाते आँखो से करती हो, कितना–कुछ कह देती हो...
है भक्ति–भाव या आकर्षण, के दिल बेताब है अब क्षण–क्षण
यह स्नेह...प्यार है या श्रद्धा...जो आँख से अर्पण करती हो,
मैं जो कुछ गुनगुनाता हूँ, गजल या गीत गाता हूँ
शब्द की शक्ति हो तुम्हीं, मेरे दिल की तुम धरती हो
खुदा का अक्स है तुझ में, इबादत है भरी मुझ मे,
हथेली मे तेरा चेहरा...तुम्हीं साँसो मे चलती हो
मेरा भी मैं नही अब तो, तेरा ही हो चुका मैं, सुन,
लहू की बन के तुम धारा...मेरी नस–नस मे बहती हो,
समझ चुका हूँ, सुन भी चुका हूँ, नजर तेरी मैं पढ भी चुका हूँ
मुख से तुम, बोलो न बोलो, स्नेह आँख से झरती हो,
तुम्हारा शुक्रिया, कि तुमने इक दिल–टूटा, जोडा है
उसी को राह दिखला कर, राह से क्यूं पलटती हो !

इक हसीं से इक जवां

इक हसी से, इक जवा को, इक बीमारी लग गई
मिल गई नजरो से नजरे, ..और कटारी लग गई
खून का कतरा बहा, ..न मर्ज ही दीखा कोई
दर्द को दिल मे बसाए ...ऑख भारी, लग गई
नींद खोई, चैन खोया, भूख है...न प्यास है
हाय अब किससे कहे ? ये क्या बीमारी लग गई ?
लोग कहते इश्क है ये, मर्ज ही है ला-इलाज
खूब तडपोगे सनम .जब कोई प्यारी लग गई ..।

क्या कहें

न जब, चाहत थी, इस दिल में
न था नजरो मे, जब कोई
बहुत ..आजाद रहते थे
किसी से .हम न डरते थे
पडी जब, इक नजर उनकी
धराशायी हुआ है दिल
अजब.. बेचैनियां–सी हैं
कहे, तो क्या कहे. .तुमको
सुनाए क्या. भला तुमको ?

न जाने दर्द कैसा है
न जाने, है तडप कैसी ?
यकायक, लुट गए हैं हम
मुहब्बत मे नए हैं हम
वही तो, इक नजर उनकी
चुराकर ले गई हमको
हमे...हैरानियां भी हैं
कहे, तो क्या कहे ..तुमको
सुनाए क्या...भला तुमको

न कुछ नजरो को, दिखता है,
न दिल से, याद है, जाती
सवालो मे, अब उलझे है
सुलझ कर भी, न सुलझे है
कहे क्या ? इक नजर उनकी
कयामत ढा गई काफी
बहुत, बेताबियॉ–सी हैं
कहें, तो क्या कहे...तुमको
सुनाए क्या .भला तुमको ?

न कुछ है सूझता, तब से
न कह पाते हैं, अब कुछ भी
कभी कुछ गुनगुनाते थे
कभी, कुछ हम भी गाते थे
हमें तो, इक नजर उनकी
हमीं से, छीन कर चल दी
बडी नादानियां की हैं
कहे, तो क्या कहे...तुमको
सुनाए क्या ..भला तुमको ?

दीवानगी

मुझे...माफ करना, जानम् .
के ..तेरा बन गया दीवाना
शह. .तेरी निगाहो ने दी थी, जो
शर्मा...गई...दिल . छीन ..कर
कोई. .अपराध नही.. मुझसे
तुझसे...भी . भूल नही ..कोई, ये
प्यार ..चीज ही ऐसी है
हो. जाता हैं, अनजाने ..मे
गया ..भूल ..मैं भी तो . सब कुछ
है अजब ..नशा . तेरे चाहने मे !

एक संवाद, ...से

एक बार...एक लडकी ने, मुझसे कहा
आप बात करते समय.. डरते बहुत हैं
आशंकित...बहुत ..रहते हैं !
मैंने कहा, इसलिए...कि...लोग
कुछ का...अर्थ...कुछ...लगा लेते हैं
...वैसे भी, दिल से मजबूत इरादो वाला
होने के बावजूद...नहीं झेल पाता हूँ
किसी लडकी की.. आँखों से...दो–चार.. होना
हालांकि...मुझे क्या ..सभी को
अच्छा.. लगता है...इस तरह . बीमार होना
पर, ऐसे मे ..लडखडाने लगती है ..जुबान
मैं भी ..कुछ का कुछ ..कह पड़ता हूँ
और फिर...मैं जिनसे...प्यार करता हूँ,
उन्ही से...मात्र...डरता हूँ
वो बोली, घबराइए मत
ये लोग. ,ये दुनिया...ये लडकिया
खा. तो नही जाएंगी?...ऐसा हुआ करता है अक्सर,
जान मे जान आई मेरी, ..मन ही मन
खुश हुआ...यह . सुन.. कर
फिर भी .वो बोलती ही गई,

आत्मा के सागर में...

आत्मा के भीतर,
जा बैठी हो 'तुम' और तुम्हारी वही छवि
जिसे. देख सकता हूँ भीतर
दिल मे .साफ–साफ
पर, कह नही सकता हूँ .कुछ भी
और न ही...छू सकता हूँ.. कुछ भी
कहने और छूने के लिए
आँसुओ के लबालब खारे–गर्म सागर में
कूदना होगा, हाथ–पांव चलाने होगे और
समूचे शरीर को, इस मुश्किल मे धकेलना होगा
जो अस्वीकार्य नही है मुझे...
किंतु मैं तैराक नही हूँ... गोताखोर भी नही
मैं तो ..मात्र एक आत्मा हूँ, सामान्य–से पुरुष की
जिसके पास.. अरमा भरे दिल का, अदना–सा सवाल है
सुनो.. इतनी कडी–सख्त–परीक्षा तो मत लो 'तुम'
स्वतः ही बोलो, कभी भीतर से
हाथ बढाओ और छू लो मुझे, विश्वास रखो
तुम्हारा हाथ पकडा .तो छोडूंगा नही
फिर चाहे. इस तूफानी सागर मे
तैरना...न आते हुए भी...मुझे
कूदना या डूबना क्यो न पडे ।

यह कैसा प्यार

तुम्हारे लिए, तुम्हीं को लिखा,
तमन्नाओ–भरा...एक खत,
तुम्ही को दे नहीं पाया,
ये डर...अनजान.. कैसा है?

पढा...था,...तेरी आँखों मे भी तो,
अध्याय...पहले प्यार का,
हुआ था...गुम कहीं पे दिल वहीं
मेरा...अनुमान...कैसा है?

यहल जाता था,...ख्वाबों से,
तेरे...झूठे...छलावों...से,
तुम्हें अब क्या बताऊ...के,
ये दिल,...नादान...कैसा है?

सहेजा तेरी चाहत को
हमेशा, दिल के स्वप्नो मे
न स्वीकारा...कभी सम्मुख
मेरा...अरमान...कैसा है?

तुम्हारे लिए, तुम्हीं को लिखा,
तमन्नाओ–भरा...इक खत,
तुम्हीं को दे नहीं पाया,
ये डर...अनजान...कैसा है?

बहार के नाम एक खत

लिखा था–हॉ. कभी मेंने, बहार के नाम यूं..इक खत
'चली आना निमत्रण पर, कही तुम ..भूल जाना...मत

बहुत. .मुश्किल से. मौसम . ने
बदन...अपना . सजाया है,
कुहुकती कोयलो...के स्वर. .ने
हरियल–मन ..लुभाया है

तुम्हारे आगमन की आस मे, है ..सब ..प्रतीक्षारत'
लिखा था–हॉ .कभी मैंने. बहार के नाम यूं..इक खत

'गुजरते हैं .बहुत सूने
जवानी ..के ..ये ढलते दिन
सहेजे हैं...कलेजे . मे
कई अरमा...तुम्हारे ..बिन

सभी कुछ सह रहा है दिल. तेरी खातिर ..मेरी चाहत
लिखा था–हाँ कभी मैने. .बहार के नाम ..यू इक खत
'चली आना निमंत्रण पर, कही तुम भूल जाना .मत .'

जिंदगी तुमसे

जिंदगी, तुमसे बात करनी थी
बर्फ की, रेत की, पतझड और आग की
कभी–कभी, फिर डरते–डरते,
आँख की, दिल–की, स्नेह–प्यार के राग की
कहना था...बहुत कुछ मुझको
तुमसे और तब–तब
आती रही नजर तुम मुझको
जिस ओर ..और जब–जब
देखो, कैसा हूँ मैं भी?...कि
विदाई के इन क्षणो में,
नहीं छोडना चाहता, मिला...तुम्हारा साथ
हालाकि मेरे होठो पर हैं
कितनी–कितनी अनगिन यादे, और अबोली बात
मालूम है...तुम जाओगी, जाना होगा तुम्हे,
पर...यह क्या?
देखो मत यूं मुझे, मत मुस्कराओ तुम ऐसे
लो भूल गया मैं, फिर इस क्षण
क्यूं रोका था
क्या सुनना था? और...
क्या कहना था तुमसे?
जिंदगी, तुमसे बात करनी थी,
बर्फ की, रेत की, पतझड और आग की
कभी–कभी, फिर डरते–डरते
आँख की, दिल की, स्नेह–प्यार के राग की।

उससे कहा था

प्रिये . मुझे
अपने को सौप दो
बहुत बिखरी हुई हो तुम
तुम्हें सहेजना जरुरी है
घर–गली और बाजार मे
छितरे पडे हैं, तुम्हारे कदमो के अंश,
सडक. .जानती है, उस पर से गुजरती हो तुम,
सूर्य–रश्मि धूप .आती है, बनकर सहेली
सहलाने, तुम्हारे...
भीगे हुए बालो के बादल,
और ये पानी ..जिसमें प्रक्षालन कर,
जब तुम, नहा लेती हो
कितना खुशनसीब हो, दहकने लगता है
महक उठती है उसमे, एक अद्‌भुत –विचित्र– देहगंध
वस्त्र सौभाग्यशाली हैं जिन्हे
तुमने बना अपना, देह पर पर यूं लपेटा है
कि जैसे अवनि ने, हरीतिमा को

आज...ओढा है
तुम्हारे घर का दरवाजा
देखकर मुझको आता, दूर से ही, भडभडाता है
मेरी संदेशवाहक बेचारी हवा से वह टकराता है
सुनो.. इस घर–गली–बाजार–सडक
धूप–पानी और वस्त्र
सबको हासिल हो तुम ..सुलभ हो तुम
इनमे मैं भी हूँ ..कहीं पर
बनकर तुम्हारा ही साया
बावजूद इसके हमारे बीच मे कुछ दूरी है
इसीलिए तो कहता हूँ,   प्रिये
मुझे– अपने को सौंप दो
बहुत बिखरी हुई हो, तुम
तुम्हे...सहेजना...जरूरी है।

वो लड़की

वो, एक लडकी,
हसती है जो खिलखिलाकर..
चश्मे के पीछे से झाँकती, वो दो आँखे
मुस्कराती हैं जो मुझको, दूर से ही आता पा–कर
वो दो पलके, झुकती है जो.
जाने क्यू, कुछ–कुछ सकुचाकर
रहे सलामत, मेरे खुदा, इस दुनिया मे. उसका आदर
और दुआ क्या मॉगू तुझसे
मेरे खुदा,...संजीदा हूँ
उस लडकी जैसे लोगो के
कारण ही, मै... जिदा हूँ
क्या दू नाम? या संबोधन मैं,
रिश्ते को, इस 'प्यार' को...
मेरे कदम बढ जाते हैं क्यू?
आखिर उसके द्वार को
वो पलके–ऑखे ..वो लडकी
भूल नही पाऊगा. कभी मैं,
मर कर, इस दुनिया से जा–कर
याद रखूगा– याद रहूगा, मरते–मरते
उसकी मुहब्बत मै .सादर !

मेरी कलम से

मेरी कलम से उतरी है जो, बन कर के कोई कविता
तेरा . ही तो ..रूप लिए वो,. लिए है. तेरी .सुन्दरता

झुकती नजरें .. दहके–गाल
मेरी चाह का, लिए खयाल,
साँचे मे ढला–सा...बदन ये
अल्हड–चंचल ..तेरी...चाल

तुझको किस की उपमा दू ?...शब्द नही..उपयुक्त . उभरता,
मेरी कलम से उतरी है जो, बन ..कर के कोई...कविता

नैसर्गिक...सौन्दर्य ..की मूरत
मेरे ..शब्द हैं...तेरी ..सूरत
तू..ही गजल का, हुस्न है...मेरी,
मेरे...अशआरों . की, जरूरत .

बिन तेरे तन्हा .जीवन का, पल–पल है मुश्किल से गुजरता,
मेरी कलम से उतरी है जो, बन कर के कोई. कविता

तेरा ..कोमल–चिकना ..चेहरा
स्निग्ध–सौम्य आकर्षण .गहरा
उस पर ..नम्र–नशीली...बाते,
सुन कर ..चलता, राही...ठहरा

मैने भी. .इक चोर–नजर से ..देखा तेरा ..रूप ...निखरता,
मेरी कलम से उतरी है जो, बन.. कर के कोई कविता !

लक्षित है...मेरी कविता में

लक्षित है मेरी कविता में...तेरा वो...शर्मीलापन,
झुकी-झुकी वो नजरे तेरी...और सुलगता सादापन

वो तेरे, होठो का हिलना
और पलको का उठना-गिरना,
या फिर....मुझसे नजर मिलाकर
मेरी ..ऑखो मे ..यूं ...उतरना

मुझको कितना ...भाता है ये ...सब कुछ तेरा ..बालापन
लक्षित है मेरी कविता मे.. तेरा वो . शर्मीलापन

वो.. .ऑंखो की... गहराई
वो ..त्वचा मे तेरी.. .तरुणाई
या फिर....सौम्य रूपा-सी निर्मल,
कोमल-गोरी तेरी .कलाई

मेरे हाथ मे हाथ डालकर तेरा साथ निभाता-- मन
लक्षित है मेरी कविता मे, तेरा वो... शर्मीलापन।

मैं एक मजनूं

कभी मै...कवि था ..तब,
कविता नाम की लडकी से
'प्रेम' किया करता था
सोते–जागते / उठते–बैठते / यहां तक कि
सारी–सारी रात, आठो प्रहर
अब मै ..मजनूं हूँ
गजलो की ..चाह को पाले हूँ
काफिए और रदीफ के बीच
दीवाना बन कर रहता हूँ, उसी का
हुस्न निखारता रहता हूँ
कविता को, पता है ये, कि मुझे गजल से 'इश्क' है
गजल जानती है, उसे पता है, कविता को प्यार करता हूँ मै
यही नही, इन दोनो के बीच
एक तीसरी .. लडकी है 'भावना'
भोली–भाली, सीधी–सादी, निर्मल–निश्छल और प्यारी–सी
चली आती है मेरे पास, बोलती–बैठती और बतियाती है
हैरान हूँ मै, कविता और गजल के बीच, 'भावना'
कैसे कायम रखे है अपना वजूद ?
तीनो मे, नही होती लडाई भी कभी
और मैं मजनूं, मिलता रहता हूँ बराबर
कविता से, गजल से और 'भावना' से
बिना किसी शक–शुबहा.. ।

इन दिनों

यह कैसा कपन है हृदय ?
प्रेम मे पडे हुए, सहमे हाथो का गुलाब
जिस तरह महकता है, कुछ उस तरह की खुशबू
मेरे दिल तुझसे आ रही है
सुन, तू मान या न मान...तेरी यह हालत
दुनिया को सब–कुछ बता रही है
ये बता रही है यह भी
कि इन दिनो बेताब हो चला है तू
कि, गुलाब की खुशबू और रंगो–आब हो गया है तू
मेरे दिल..महकना छोड.. दहकना सीख,
वरना जीवन, जो दु:ख का गुलाम है
इस गुलाब–सी जिदगी को मसल देगा
वक्त निर्मम है बडा,
सारे सपनो को कुचल देगा
धडकने मत बढा, कॉटो पे चलना, उनमे खिलना सीख
ताकि जब, खूने–जिगर ऑख से बहे,
तो कोई मुश्किल न हो
अफसोस मे डूबी जिदगी न हो, और ..
टुकडे–टुकडे .दिल न हो ।

बेनजीर

तेरी सूरत की नरमी से, तेरी चाहत की गरमी से,
मै जाने क्यू . झुलसता हू, कि तुझमे . मै ही बसता हूँ
तेरी नीदो के सपनो मे, तेरे रिश्ते के अपनो मे,
मैं जाने क्यू..तडपता हूँ, कि तुझमे . मैं ही बसता हूँ
तेरी सासो के शोलो से ,तेरे. .होठो के, बोलो से,
मैं जाने क्यू..सुलगता हूँ, कि तुझमे मैं ही बसता हूँ
तेरी आँखो के ..प्यालो मे. .तेरे दिल के...सवालो मे,
मै जाने क्यूं ,झलकता हूँ, कि तुझमे...मैं ही बसता हूँ
तेरी मीठी–सी निदिया मे ..तेरे माथे की बिदिया मे,
मैं जाने क्यू . चमकता हूँ, कि तुझमें.. मै ही बसता हूँ
तेरी जुल्फो के सावन मे ..तेरे अरमा के आगन मे,
मैं जाने क्यूं ,महकता हूँ, कि तुझमे .मै ही बसता हूँ
तेरी राहो में ..आने से ..तेरी बाहों मे ..जाने से,
मैं जाने क्यूं..ठिठकता हूँ .हां तुझमे.. मैं ही बसता हूँ
तेरी हसरत–खयालो मे.. तेरे नाजुक से. .गालो मे,
हया से...मैं...दहकता हूँ..हॉ, तुझमे ..मैं ही बसता हूँ
तेरी चाहत के इस गम में, तेरे सपनो के मौसम मे,
मै जाने क्यू..तरसता हूँ, हॉ, तुझमे ..मै ही बसता हू
तेरी उन मूक आहो मे . गमो की धूप–छांवो...मे,
मैं जाने क्यूं...सिसकता हूँ .हॉ...तुझमे .मैं ही बसता हूँ
तेरी हर एक मंजिल पे...तेरे अंदर. .छुपे दिल मे,
मैं जाने क्यूं..धडकता हूँ..हॉ ..तुझमे...मैं ही बसता हूँ
तेरी बातो के सारे अर्थ...हैं बिन तेरे सहारे व्यर्थ,
मै जाने क्यूं समझता हूँ. हॉ...तुझमे...मै ही बसता हूँ।

मेरा कवि हृदय कहता है

मेरा कवि हृदय कहता है, ..तेरी सुंदरता को लिखू
रूप–गध–रस का सगम, उस अनुपम–अनुभवता को लिखूं

लिखू उन...नजरो का शर्मीलापन,
व्यथित हुआ . जिनसे...मेरा मन,
या फिर लिखू, वो मौन–निमत्रण,
पहली प्रीत का....जिसमे. वर्णन
मात्र. न. .व्याकुल. .इतना ..दिखू !

मेरा कवि हृदय कहता है, ...तेरी सुंदरता को लिखूं
रूप–गध–रस का सगम, उस अनुपम–अनुभवता को लिखूं

लिखू, चेहरे मे जो चपल ताजगी,
बात–बात मे...जो.. नाराजगी
या फिर लिखू, ..वो रूप–सादगी
तेरा. सुहाना .भोलापन...
मन की बात को, क्यू ना कहूँ?

मेरा कवि हृदय कहता है, ...तेरी सुंदरता को लिखूं
रूप–गध–रस का संगम, उस अनुपम–अनुभवता को लिखू

लिखू, लरजते होठ की लाली,
नाजुक कपन .छवि निराली
या फिर लिखू ..उमरिया बाली
तुझमे, जगा गई.. सम्मोहन
अपनी व्यथा . .मै यू ही कहू

मेरा कवि हृदय कहता है, ...तेरी सुंदरता को लिखू
रूप–गंध–रस का सगम, उस अनुपम–अनुभवता को लिखूं

इक गजल–सी...

आज पहली बार दिल मे . इक कली .खिल गई,
इक नजर थी शोख उसकी, मिलते–मिलते . मिल गई
उसको देखा था यूं ही बस, मैंने उडती निगाहो से,
देखकर शामत बुलाई, ..होठ मेरे ..सिल गई
उसकी नजरो मे नशा .और बात मे अदाज था,
लाख चाहा कि बचा लूं, पर वो. लेके...दिल गई
अब जुबा पे नाम उसका, लब पे उसकी चाह बस,
कुछ न पूछो हाल अपना, कैसे.. वो. .हिल–मिल गई
ये सफर भी जिंदगी का . कितना तन्हा था 'मुकेश'
देखकर उसको लगा यू, अपनी मजिल मिल गई
उसको देखा एक पल जो.. देखते ही रह गया,
उसको पा–के, पाया सब–कुछ, दिल की बगिया खिल गई,
और उसकी क्या सुनाए...? दास्तां. .दिल से भला,
चलती–फिरती शायरी थी .इक गजल–सी मिल गई,
आज पहली बार दिल मे. .इक कली ..खिल गई,
इक नजर थी शोख उसकी, मिलते–मिलते ..मिल गई !

दिल का हाल

याद की बारिश हुई, धरती पे दिल की, इस तरह
तपन मे सावन की पहली, बरसे रिमझिम जिस तरह
तैरते .सपने .नजर के ..रास्ते.. यूं .बह. .चले
एक पल मे . इक जमाना फिर से लौटे जिस तरह
कोई आया .फिर से, ख्वाबो के सहारे हम तलक
मीठी–मीठी एक कसक, उठती हो दिल मे...जिस तरह
आहटे सुनता है. .सुनकर. जागता है. दिल मेरा
दस्तके हैं दिल पे उसकी .जानी–पहचानी...तरह
मुस्कराता–झूमता है. दिल...हर इक धडकन पे बस
वो जव आती है, जहन मे हॉ–बहारो की तरह
उसकी बाते, उसकी यादें...और बस, उसके खयाल
बस्ती–ए–दिल में बसे हैं, वो क्या जाने किस तरह
आज .ऑखो मे चमक है ..और चेहरे पे है नूर
दिल ही जाने...प्यार का लौटा है मौसम, किस तरह
अपने दिल का हाल ..कहकर, क्या लिखे कविता 'मुकेश'
एक भोली ..नार ने.. लूटा है उसको किस तरह?

हाँ, मुमकिन है...

क्या मुमकिन ही नही, किसी को, बिन चाहे ही प्यार मिले,
प्यार मिले या न मिले चाहे प्यार की कल्पना, साकार मिले

किसी ..षोडसी बाला की
नजरो में, खोई–खोई
मिल सकती है यू भी मुहब्बत
अनजाने में, कही कोई

पढ सकती है युवती. प्रेम, किसी युवक से बातो मे
दिख सकता है,..दिल का, कोना–कोना, चांदनी–रातो मे,

चाहत स्वतः जाग उठती है
जब भी होते, कुछ संयोग
मैं कहता हूँ इसे, साथियो
ये संयोग नहीं,...सु–योग

बनी रहे प्रीत इस जग मे,...मिलते रहे ..बस. प्रेमी–युगल.
सदा बरसते रहे भाव, कि .उभरे कविता–गीत–गजल ..

जो कुछ मैंने, जब–जब देखा
शब्दो मे लिखता रहता हूँ
हाँ, मुझको भी .प्यार मिला था
किसी नजर मे.. कहता हूँ

हाँ, मुमकिन है.. किसी–किसी को बिन चाहे ही.. प्यार मिले
प्यार मिले या न मिले चाहे. .प्यार की कल्पना, साकार मिले।

प्यार तो 'प्यार' है

जब कभी होता है 'प्यार' ..
तो नही देखता उम्र, नही देखता भेद
पुरुष और नारी का..
बहुत देर बाद ही, चलता है पता...
सब को इस बीमारी का...
नही सोचता वह परिणाम, वह तो 'प्यार' है
जब कभी होता है..
सब का दिल, खुश बहुत होता है,
पा--लेता है कोई जीवन, कोई दर्द मे रोता है
कही पे बनकर पीडा मन की, सचमुच आँख भिगोता है
प्यार तो 'प्यार' है, बेरहम भी होता है
खोजता है वह समर्पण, निष्ठा मे ..विश्वास में,
बनकर खुशबू दिलो मे अक्सर. .
वही महकता रहता है
बिन बोले, कहता है बहुत कुछ ..
कभी--कभी चुप होता है
प्यार तो 'प्यार' है
इस तरह ही होता है।

प्यार

रहेगा नही तो
रहेगा बहुत कुछ
संबंध ना सही, तो परिचय सही
परिचय न सही, तो याद सही
अगर ये भी नहीं रहे
तो रहेगा..
संबंध, परिचय और याद के बीच
महकते गुलाब–सा ...'प्यार',
और बनी रहेगी इसकी खुशबू
युगो–युगो, मन–मंदिर मे,
कुछ भी कर लो, बचा रहेगा
जन्म– जीवन और मृत्यु के बीच,
मृत्यु– जीवन–जन्म के बाद
मिलन–जुदाई के संग–सग भी,
यही तो...ये जो है 'प्यार'
...वाह रे 'प्यार'
.. उफ..'प्यार' ।

तेरी चाह में

महसूसा था. मैंने 'स्नेह',
जब अपनापन, तुम में देखा
महसूसा था, मैंने 'हर्ष'
जब करीब, .तुम को देखा

महसूसा था 'दु:ख' भी तब ..जब–जब थी घडिया. ,जुदाई की
महसूसा था, 'दर्द' कोई जब. याद .तुम्हारी...आई थी,

महसूसा था ..'प्यार' भी जब
ऑखो मे. तेरी झाका,
महसूसा था, हॉ यह भी कि
तू ही तो. मेरा जीवन
तुझसे, डरते ऑख मिलाकर
मैंने ..मचलता पाया ..मन

यह सब ..जो महसूसा मैंने. .तुझको भी एहसास तो था...
स्नेह–हर्ष–दु:ख–दर्द–प्यार का, .हर पल...इक उल्लास तो था

अपने दिल से पूछ कि जिसमे
कोई ..क्या .मुझ–सा भी है?
सहकर तेरे, सभी जुल्म जो
तेरी खातिर...तरसा भी है ?

हॉं...सीधे–सच्चे और भोले...मन से ये अपराध हुआ
तेरी चाह मे ..भीतर–भीतर...घुटकर दिल बरबाद हुआ

सच ..मेरा दिल बरबाद हुआ !

सखी

मेरा..इरादा है खुदा से
तुमको मॉग लेने का
इसीलिए, उसकी दी हुई सॉसो मे कसमसाता हूँ
हालाकि...जानता हूँ कि
उसकी नीयत भी, तुमको बनाते वक्त
बदल गई थी...तभी तो
इसानो ने,-मस्जिद मे, उसका अक्स न रखा
मदिरो मे..पत्थर वना के बैठा दिया
गुरुद्वारो मे घेर कर उसको
गिरजाघरो मे सलीव पर चढा दिया
आज भी, चारो जगहो पर
दसो दिशाओ मे स्थित, वो
हर वच्ची–युवती–नारी मे, देखता है तुम्हे
जाता तो मैं भी हूँ उससे मिलने,...पर
अव प्रार्थना नही करता उसकी,
शिकायत करता हूँ उससे, कि
अव पहले की तरह मुझसे मिलने
क्यूं नही आती–'तुम' ?

सिलसिला

ताजिंदगी सुन्दर चीजों से डरता रहा मैं
ताजिदगी सुन्दर शब्द, भाव और विचार
सजोता रहा मैं
ताजिदगी चलता रहा यूं
डरने, सोचने ओर संजोने का
अतहीन सिलसिला मुझ पर
फिर भी, ताजिदगी,
सुन्दर फूल–शब्द–भाव
चेहरो और लडकियो पे
...मरता रहा मैं
जीने और मरने के बीच
डरने और सजोने की लालसा लिए
कुछ ऐसे ही, बिल्कुल ऐसे ही...
'प्यार' भी करता रहा मैं
आखिर, एक पुरुष मन जो हूँ
.. और कर भी क्या सकता था मैं ?

दिल में रखकर दर्द

दिल मे रखकर दर्द तुम्हारा, जीना हमको याद है
यूं चाहत मे अश्क बहाना, पीना हमको याद है
हमने तो वो जुर्म किया है, जिसकी सजा बस आंसू हैं
खुद की पीडा खुद को सुनाना–सहना हम को याद है
किसके आगे, दिल खोले ? कि दिल के दुश्मन–दिलवाले
दिल को तोड के कहते हैं, 'दीवाना' हमको याद है
चाहत के तल्ख तजुरबे है, रुसवाई है, तारीकी है
अब अपने आप से बतियाना, वह जाना हमको याद है
नाराज भला क्यूं हो बैठे, हमने तो सच ये कबूल किया
एक उम्र से मरते हैं तुम पर, मिट जाना हमको याद है !

मूड की बात

मूड की बात थी एक बात मैंने लिख डाली,
दर्द की शाम थी, एक शाम मैंने लिख डाली
लफ्ज भी लडखडाए थे, खुद–ब–खुद चल के आये थे
लबों पे आह थी, एक आह मैने लिख डाली
कोई चेहरा भुलाया था, सामने फिर से आया था
उसी की चाह थी, एक चाह मैंने लिख डाली
जो निकली बात की एक बात मे,·या दो घडी के साथ में
किसी की जान थी, एक जान मैंने लिख डाली
मै प्याले मे घुला था जब, दर्द मे, मैं ढला था जब
गमो की रात थी, एक रात, मैंने लिख डाली
मूड की बात थी, एक बात मैंने लिख डाली
दर्द की शाम थी, एक शाम मैने लिख डाली

तुम

तुम, सचमुच, 'महान' हो,
इसलिए नहीं, कि तुमने मुझे 'महान' कहा है
. बल्कि इसलिए
कि तुम, इस दुनिया की
सबसे सुन्दर
अविचल–अप्रतिम
एक कृति हो, 'शक्ति' हो
तुम ही 'दुर्गा' तुम ही 'सीता'
'सावित्री' हो सकती हो...
तुम मे रूप सखि–सा सुन्दर, मुझ निर्बल की 'प्रेरणा'
तुम मे प्रेम है 'राधा'–सा, और 'कृष्ण' की 'उत्प्रेरणा'
तुम, नायाब कृति इस जग की
जीवन की रखवारी हो
तुम, महान हो सचमुच क्यूके
हे सखि तुम एक 'नारी' हो
सबसे अलग हो, सबसे पृथक् हो
तुम ही 'सृष्टि' सारी हो
मेरा सीमित ज्ञान है कहता, सचमुच सबसे 'न्यारी' हो
तुम 'पराग' हो पुष्पो का और 'सुरभि' सारे उपवन की
तुम हो 'ममता', 'स्नेह' की समता
सखि पहचान हो, 'जीवन' की
मुझको शब्द नहीं मिलते हैं, मुझपे क्यू बलिहारी हो ?
तुम, 'महान' हो, सचमुच मानो
क्यूके तुम एक.. 'नारी' हो।

उससे... : एक

तुझ पर गर्व करू–इतराऊ
तेरे रूप का, मैं यश पाऊ
क्या बोलू? अब क्या बतलाऊ
शका मे हूँ, सोचे जाऊ
तू आशा, अभिलाषा मेरी
प्रेम–भरी परिभाषा मेरी,
अपने दिल मे, तेरी धडकन
सुन–सुनकर मैं, जीता जाऊ
तुझ पर गर्व करूं– इतराऊ
तू अनुपम–उल्लास हृदय का,
सुन्दर क्षण, इस जीवन–लय का
दीवाना बन, देखूं तुझको
तेरी छवि पे, मर–मर जाऊं
तुझ पर गर्व करूं– इतराऊं..
बंजर–मन, मैं बोझिल साँसे
बिना बाप का, लेकर यादे
दर्द मे झूलूं, दु:ख मे गाऊं
अपने आँसू, पीता जाऊ
तुझ पर गर्व करूं– इतराऊं
तूने मुझ मे क्या देखा, री
लाघी जो, सीमा–रेखा री
अरी बावरी, अरी बावरी
सुन, मै अपना रुदन सुनाऊ
तुझ पर गर्व करूं– इतराऊं
तुझ पर गर्व करूं– इतराऊं
तेरे रूप का, मैं यश पाऊं
क्या बोलू अब क्या बतलाऊ
शंका मे हूँ, सोचे जाऊ।

उससे... : दो

तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
इतनी, जितनी दुनिया है
इतना, जैसे ईश्वर है
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
कोमल तेरे चरण–कमल, तू नाजुक, जितनी छुई–मुई
तू आई मेरे जीवन मे, लेकर के खुशियां नई–नई
दिन मेरे सुहाने हैं सारे, रातो का रूप मनोहर है
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
इतनी, जितनी दुनिया है
इतना, जैसे ईश्वर है
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
तू निर्मल–पावन–नव आशा, मेरी चाहत और अभिलाषा
तुझसे जीवन संगीत मेरा, तू प्रेम की मेरे, परिभाषा
सुन, अजर–अमर हैं हम दोनो, सॉसो का क्या जो नश्वर है?
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
इतनी, जितनी दुनिया है
इतना, जैसे ईश्वर है
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
मुझे प्यार ने बाधा है तेरे, मेरे सपने भी, अब तेरे
जो ख्वाब तुझे लेकर के बुने, वो ख्वाब मुझे हैं अब घेरे
हम भीगे हैं चाहत मे सनम, जीवन सुख–दुःख का सागर है
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है
इतनी, जितनी दुनिया है
इतना, जैसे ईश्वर है
तू सचमुच बहुत ही सुन्दर है !

उससे... : तीन

तू मेरी सुंदर भोर है . अमृत–वेला चहुं ओर है
तू बीती हुई रात है मेरी, खिलती प्रात. का शोर है
जगते हुए दिवस के लब पर, है उत्साह–भरी धुन जो
मधुर रागिनी वह तू मेरी, पावन–प्रेम–किशोर है
तू मेरी सुंदर भोर है, अमृत–वेला चहुं ओर है
पत्तो पर बिखरी शबनम तू, खुशबू है खिलते फूलो की
तू सुबह–गुलाबी सपनो की, जिसे देख झूमते मोर हैं
तू मेरी सुदर भोर है, अमृत–वेला चहुं ओर है
तेरा ख्वाब लिए मैं सोता हूँ, अलसाता हूँ – उठ जाता हूँ
मुझे प्यार जिंदगी है तुझसे, मेरा मन भाव–विभोर है
तू मेरी सुदर भोर है, अमृत–वेला चहु ओर है
तू ढलती शाम है मदमाती, कभी रात चाँदनी शीतल है
है सुबह–सुहानी तू ही सनम, मनवा मे उठती हिलोर है
तू मेरी सुंदर भोर है, अमृत–वेला चहु ओर है
नवगति–नवलय–नवल प्रभात, है नूतन–शुभकामना साथ
ससार जग रहा है सारा, जगता जीवन हर–छोर है
तू मेरी सुंदर भोर है, अमृत–वेला चहु ओर है !

उससे... : चार

तुम नही लिख सकती हो, कोई भी कविता
पर हाँ, तुम जरूर बन सकती हो मेरी कविता
क्यूंके लिखने के लिये कुछ भी, महसूसना जरूरी है
दर्द से दु:खते दिल का बहता, खून चूसना जरूरी है
ताकि महसूसते हुए, खून को बहते रहने से, बचा लिया जाए
भले ही आँसू बनकर आँख मे छलके, पर .पी लिया जाए
और इस तरह सबकी नजर बचाकर, जी लिया जाए
लिख लिया जाए, अपना जीवन, कविता मे
जिसमे 'जी–कर', आँसू पी–कर, मुस्करा लेता हूँ मै,
मर जाता हूँ एक ही क्षण मै, आँखो मे तेरी—–जाकर
पा लेता हूँ फिर नवजीवन, साँसो मे तेरी आकर
जीने और मरने की कथा है, दिल मे धडकन की सरिता
सचमुच तुम ही हो सकती हो.. मेरा दिल– मेरी कविता !

समय के दरम्यां

उस समय भी, जब के तुम थी दूर, तब चाहा तुम्हे
इस समय भी, जब के तुम हो सामने, मेरे साथ हो
उस समय, जब तुमने की थी, ऑख से इक बात–वो
इस समय, फिर चाहता हूँ, प्यार की वो बात हो
उस समय, जब हम मिले थे, मुस्कराहट साथ थी
इस समय भी, दिल का अरमां, तुममें, वो, जज्बात हो
उस समय तो रात थी, जब पहली मुलाकात थी
इस समय भी, सो रहा जग, वैसे कुछ हालात हो
उस समय भी, मुश्किले थी, जब बहुत हम पास थे,
इस समय भी, उलझने हैं, हाथ मे तुम हाथ दो
सोचता था, तब भी मैं तो, मेरी किस्मत हो तुम्हीं,
अब भी है अहसास, तुम तो ख्वाब की बरात हो
मैंने मागा जिदगी से, तुम को तब, जब मैं न था
मेरे पिछले कर्म की तुम, इस जनम सौगात हो
उस समय भी, जब के तुम थी दूर, तब चाहा तुम्हे
इस समय भी, जब के तुम हो सामने, मेरे साथ हो
उस समय, जब तुमने की थी, आँख से इक बात वो
इस समय, फिर चाहता हूँ, प्यार की वो बात हो।

एक रात को

तुम ऑख के दीपक बंद करो, मैं द्वार हृदय का खोलूंगा
तुम होंठ पे मेरे होठ रखो, मैं सॉस मे खुशबू घोलूगा
मुददत से मिले हैं प्यार के पल, कहना है क्या, और सुनना क्या
तुम सुन लो दिल की हर धडकन, इस रात मैं कुछ न बोलूगा
था आह समेटे दिल ये सनम, और प्यास प्यार की तन्हा थी
तुम बनकर जब हमदर्द मिले, मुझे लगा, मै अब खुश हो लूगा
कितने दिन दर्द मे काटे हैं? रातों ने गम ही बाँटे हैं
जगा हूँ बरसो का बेकल, तेरी जुल्फ की छॉव मे सो लूंगा
तुम ऑख के दीपक बद करो, मैं द्वार हृदय का खोलूगा
तुम होठ पे मेरे होठ रखो, मैं साँस मे खुशबू घोलूगा
मुद्दत से मिले हैं प्यार के पल, कहना है क्या, और सुनना क्या
तुम सुन लो दिल की हर धडकन, इस रात मैं कुछ न बोलूगा।

मैं सुन रहा था

विज्ञान कहता है, पुरुष हो या नारी
मनुष्यो मे हृदय यानी दिल,
देह के भीतर
बाए फेफडे के नीचे होता है
वही धडकता है, मगर मैंने तो
उसे, अपने दाहिने फेफडे के ऊपर भी
कोमल सुडौल–चिकने स्तन के नीचे
धडकते हुए महसूसा है
जो कि तुम्हारा था, पसीने–पसीने था बदन
पर तब दोनो दिलो की धडकन, एक हो रही थी
एक ही सगीत था, एक ही लय थी
तुम तो खोई थी, खयालो मे कही
और मैं सुन रहा था
धरती और आकाश के बीच
बादल और बरसात के बीच
रोशनी और अधकार के बीच
अपनी देह पर, दाई तरफ
तुम्हारे दिल के धडकने की गजल
जिसका हरेक शेर बेशकीमती था

वाकई, याद रहेगा उम्र–भर
मेरी उम्र के हर पुरुष को
तुम्हारी उम्र की
हर स्त्री के
दिल के धडकने का
ये पहला और अद्‌भुत सगीत
यह भी तय है, न लिख सका है कोई
न लिख सकेगा कोई, मुझसे पहले और मेरे बाद मे
दिल के धडकने और महसूसने का
ये अंतहीन, मगर अप्रतिम सिलसिला
जिसको लिखने के लिये, मुझको
लफ्ज भी
तुम्हारी साँसो से उधार लेने पडे !
सुनों, ...तुम्हारा शुक्रिया !

जाने क्यूं?

एक याद, स्मृति बन कर के,
जिंदा है जो, इन सॉसो मे
वह लहू, धडकता है बनकर, दिल
अक्सर तेरे ख्वाबो मे,
तुझको भी अहसास है क्या
महसूस जो मुझको होता है
हम दोनो, प्यार मे भीगे हैं
लगता है, अक्सर बातो मे
तुम चुप रहकर, कहती सब–कुछ
सुनता और समझता, मै दिल से,
कुछ भी तो कर, न पाता हूँ
न कहता कुछ, तुमसे मिल के
ये उम्र भी क्या दीवानी है
धडकन दिल से बेगानी है
पीडा में प्यार है पगा हुआ
फिर भी, मुस्कान चुरानी है
ये कौन जाने, क्या होना है
क्या पाना है, क्या खोना है
फिलहाल याद है सग तेरी
इन तन्हा मेरी रातो मे
एक याद, स्मृति बन कर के,
जिंदा है जो, इन सॉसो मे
वह लहू, धडकता है बनकर, दिल
अक्सर, तेरे ख्वाबो मे
अक्सर ही, तेरे ख्वाबो मे !

कोई बात नहीं

चाहत का फूल खिलाया है, तो दर्द की खुशबू भी लूगा,
यह तुझसे जुदाई के कॉटे, चुभते हैं तो चुभने दूगा
खुद जी लूगा तन्हाई मे, यादो में बसर भी कर लूगा
रिसता है दिल का जख्म अगर, बहता है खूं, बहने दूंगा
कल तक नजदीक बहारे थी, कलिया थी–भंवरे मिलते थे,
अब खिजा का मौसम है दिल पर, मै दिल को दु:ख सहने दूगा
कुछ लोग जो मेरे अपने थे, एहसास–गुलाबी सपने थे,
उन सब की याद छुपाए हूँ, तो प्यार भी मै छुपने दूंगा
रातो को तन्हा काटा है, टुकडो मे खुद को बॉटा है
मै मोम की मानिद पिघला हूँ, तुमको सुदर सपने दूगा
चाहत का फूल खिलाया है, तो दर्द की खुशबू भी लूगा
रिसता है दिल का जख्म अगर, बहता है खू, बहने दूंगा !

उसकी खातिर

मैने उसकी खुशी की खातिर
खुद बिकना स्वीकार किया
दर्द से अपने दिल को जलाया
छालो का उपहार लिया
खून के आँसू पी डाले और,
कुचल सभी अरमां डाले
जीतना मेरा मुश्किल था
मैं हंसते...हंसते हार लिया
मैने उसकी खुशी की खातिर
खुद बिकना स्वीकार किया
खुद को टुकडे–टुकडे करके
बाँट दिया, हिस्सो मे कई
उसने फिर भी न जाना कि
उससे मैने 'प्यार' किया
मैने उसकी खुशी की खातिर
खुद बिकना स्वीकार किया !

जिंदगी के लब पे

जिंदगी के लब पे यूं तो, प्यार से इनकार था
पर झलकता था मगर . के उसको मुझसे प्यार था
गर उसे इनकार था...तो क्यू किया इकरार था
मुस्कराकर मुझसे मिलना, उसका .यादगार था
गैर था, गैरत भी थी, उसमे कि जो कातिल मेरा
मार कर मुझको ही पूछता था, कैसा.. वार...था ?
थी बहुत मासूम चाहत, दिल के भीतर पल रही
साथ में था डर का साया, ख्वाब इक. लाचार था
क्या किया जाए, कुछ ऐसा, पा लिया जाए उसे,
जिसकी चाहत–ऑख–चेहरे मे, मेरा संसार था
सोच रखा था कि उसको कह भी देगे यह कभी
हम उसे बचपन से चाहते हैं, तभी से 'प्यार' था
हम नही थे उसके आशिक, उसके आशिक बन गए
बात मे उसकी असर था, ऑख मे इकरार था
ऑसुओ मे बह रही है, हर सदा बनकर गजल
उसका गम चाहत मे मेरी, इस तरह शुमार.. था
किस तरह रूठी है किस्मत, क्या बताएगे 'मुकेश',
उनको दिल ये तोडना था, उनको इख्तियार था
उफ अजब है यह हकीकत, सच कहो तो भी 'मुकेश'
लोग लानत दे रहे हैं, जिन पे एतबार था।

मौत पर मर मिटा

मैने, मरने से पहले
एक दिन उसको देखा
सच में, बहुत सुंदर सुशील और सरल थी वो
उसके आने से, मेरे आस–पास बडी चहल–पहल थी
लोग मुझे प्यार भरे अपनत्व से देख रहे थे
सजा रहे थे, मुझे
उसके साथ मेरे जाने के दु:ख से
भीगी थी संबधियों की ऑखें, रिश्तेदारो के दिल
मैं भी हैरान था–'मै एक पल मे इतना महान कैसे हो गया ?'
जब तलक अकेला जिया, तुच्छ अभावी जीवन,
उसके आते ही मैं तो 'भला इन्सान' हो गया
काश ! बहुत पहले ही मुझे मिल जाती, मेरे पास आ जाती वो
वही तो,
जिसे कुछ लोग–'मुहब्बत', 'जिंदगी', या फिर
मेरे शब्दो मे–'मौत' कहते हैं
मैंने एक दिन मौत को देखा,
मैं उसी पर मर मिटा
बहुत सुन्दर थी वो, इतनी कि बस *.मत पूछो !*

क्या पता ?

कौन, कब, किस वक्त, कहाँ; किसके दिल मे ?
उतर जाएगा...क्या पता ?
किसकी चाहत मे, कोई घुल के
कब मर जाएगा...क्या पता ?
कैसी उलझन...कब किसी के दिल को विवश कर देगी
कौन किसके जुल्म सहकर, दर्द से भर जाएगा, क्या पता ?
कब किसी उम्र में कोई, कही से आ–कर के
दिल, किसी दिल का कैद कर जाएगा क्या पता ?
कब से बिछडा है चैन, उसकी चाहत मे, दिल से
कब सुकून लौट के दिल का, घर आएगा क्या पता ?
किस से क्या कहना, अपने ख्वाब अपनी ख्वाहिश का
ख्वाब तो ख्वाब है आखिर, कब बिखर जाएगा, क्या पता ?

कभी न कहना

उस लडकी से कभी न कहना, उस पर कोई मरता था
सब बाते ऑखो मे पढकर, बंद हृदय में करता था
हालांकि प्यार, उमडता था, और पीड़ित दिल को करता था
पर दीवाना वो, दर्द को सह कर, ठंडी आह न भरता था
उसे देख, चमक उठती थी नजर, सारी सुध–बुध खो जाती थी
दिल एक नजर उसकी पा कर, अरमान हजारो करता था
वो दिख जाए, वो मिल जाए, कुछ बातें हो मुस्कान झरे
एक प्यार–भरा दिल सोच के ये, जाने क्यूं फिर भी डरता था
आभास उसे सब होता था, वो हंसती थी, कलियाँ खिलती थी
हमने देखा हमसे मिलना, उसका जग–भर को अखरता था
हर याद छुपी है सीने मे, हर बात के लाखो, किस्से हैं
दिल सहकर, सारी मायूसी, अतस से ऑसू झरता था
उस लडकी से कभी न कहना, उस पर कोई मरता था
सब बाते ऑखो मे पढकर, बंद हृदय मे करता था !

इक दिन

सड़क पर घूमता था मैं, सडक पर खो गया इक दिन
सडक की सुन–सुनकर वाते, सडक का हो गया इक दिन
हादसे होते देखे थे, हादसे होते रहते थे
हादसों से यचकर चलना, सडक के लोग कहते थे
हादसा हो गया इक दिन, सडक पर घूमता था मैं
सडक पर खो गया इक दिन
भिखारी– मुझसे हंसते थे, अपाहिज– मुझको मिलते थे
गरीवों से मिला गर मैं, दुआएं मुझको देते थे
उन्हीं से कर–कर के वाते, उन्हीं का, हो गया इक दिन
सडक पर घूमता था मै, सडक पर खो गया इक दिन
सफर पर मैं चला इक दिन, सफर मे खो गया इक दिन
सफर की सुन–सुनकर बाते, सफर खुद बन गया इक दिन
साथ मे सयकी यादे थीं, मेरे अपनों की वातें थी
सजाए वैठा था अरमां, चाँदनी मेरी–रातें थीं
जगा था, खूब रातो का, रात में सो गया इक दिन
सफर पर मैं चला इक दिन
प्यार से मैं मिला, इक दिन, प्यार मे खो गया इक दिन
प्यार की सुन–सुनकर बाते, प्यार पर...मर मिटा इक दिन
वो भोली–भाली सूरत थी, वो सीधी–सादी मूरत थी
मुझे उसकी जरूरत थी, उसे मेरी जरूरत थी
उसी के पास वैठा तो, उसी का हो गया इक दिन
सडक पर घूमता था मैं, सडक पर खो गया इक दिन
हादसा– हो गया इक दिन, प्यार पर मर मिटा इक दिन।

अपने आप से

प्यार, तू दिल मे आता क्यूं
प्यार, तू तडपाता है क्यूं
न मैं समझा हूँ ये अब तक
न तू मुझको समझाता ..क्यूं
प्यार तू दिल मे आता क्यू

अरे ओ, बावरे–से मन
तेरी बढती है क्यूं धडकन
के जब खिलती कली कोई
करे बरखा से आलिंगन
तू पगले आस, लगाता क्यूं
प्यार तू दिल मे आता क्यूं ?

अरी चंचल, मेरी नजरो
चमकती रहती क्यू प्रहरों
तुम्हें क्या भा–गया कोई
जो ढूंढो, तुम...नगर–शहरों,
कोई बेबस कर जाता क्यूं
प्यार, तू दिल में आता क्यूं ?

रे मेरे एकाकी जीवन
मैं जानूं, तेरी हर उलझन
तुझे भी दर्द है कोई
किसी का साथ– चाहे मन
उसी से, कह न पाता क्यूं ?
प्यार तू दिल मे आता क्यू?

मेरे मासूम अरमानों
मुहब्बत, तुम तो पहचानो,
नजर से बोले जब कोई
उसी को अपना तुम जानो
समझ लो, मैं बतलाता क्यूं ?
प्यार यह, दिल मे आता क्यूं?

आँसू और प्यार

कभी हुए थे दो से एक, मेरे मम्मी और पापा,
बनाया होगा, सपनो मे घर, किया होगा परस्पर प्यार,
और देखा होगा ..हमारा आना
हम, जो पॉच बहन–भाई हैं,
जिनमे उनके
उल्लसित दिन और नादान खुशिया समाई हैं
अफसोस देखते–देखते, पढते–लिखते,
और उम्र के वर्ष चढते–चढते,
पता चला, दुनिया बहुत भारी हो गई,
दुनिया को भीड की बीमारी हो गई
पापा ने किया था, जवानी मे इस भीड का सामना
भीड– जिसमे विपन्नताए–अभाव–आपदाएं और
जरूरतो का प्रदर्शन, ज्वलंत–जीवत और उग्र था,
डेढ पसली की देह मे भी– पापा,
भरे थे बुलद इरादो का, अटूट हौसला,
जूझे थे अकेले ही, अपने बच्चो पर, हमला करने वाली
अभावो की भीड और विपन्नताओ की बीमारी से
मुझे उनकी जीत जब साफ दिख रही थी
तभी सो गये वो,
नींद आ गई उनको
वो उठ नही सके फिर, नही बतला सके हमको
कि ऐसे ही जाना और सोना होगा उनको
अब भी याद आते है वो, तो निकल पडता है ऑखो से
धार–सा बहता उनका दिया
निर्मल–निश्छल . वो 'लाड–प्यार'
मैं भी, अब ही तो समझा हूँ
कि आँसू और प्यार
दोनो इतने बेदर्द क्यूं हैं ?

लोग

समय–समय पर अपना बनकर आते रहे जीवन मे लोग
उन लोगो मे, प्यार ढूंढ कर, जिंदा रहे हैं मुझ–से लोग
दर्द भूलकर लगा ठहाके, प्यार–स्नेह जिनमें बांटा
दामन में दु:ख भरकर मेरे, मुझको छोड चले वे लोग
कुछ कलियो से मिला था मैं, कुछ फूल भी मुझको भाए थे,
प्यार से जब–जब देखा उनको, मुझको मसल चले वे लोग
वो निश्छल आँखे–बाते, चेहरा तक याद मुझे भीतर,
उनको भूल नहीं पाया, पर मुझको भूल चुके वे लोग,
अब जख्मी– तन्हा हूँ मैं, गजलों मे अश्क पिरोता हूँ
दिल मे अपना दर्द छोडकर, जब कि जा चुके वे लोग !

8 जनवरी

पहले जब आता था जन्मदिन
तो देखा करता था, मैं उसकी राह
कितनी हसरत से, और कितने जब्त भरे दिल से
सपने–अरमां–इच्छा–चाहत घूमते थे जहन मे
और जन्मदिन–हंसता था, बोलता था
चहक उठता था
अब, चला आता है चुपचाप .मौन रहता है
जाने क्यूं ?...शायद
जन्मदिन ही जानता है, कितनी बार देखेगा मुझे
और कौन–सी बार ..अंतिम बार होगी
इसलिए ही अब उसने, चुप्पी साध ली है
जाने कब आता है, आकर के चला जाता है
मूक रहता है कुछ न कहता है
चुपचाप आयु की नदी मे
वर्ष–सा बहता है ।

हालांकि

मुझे किसी ने
'प्यार' नहीं किया
फिर भी
अपने माँ–बाप के
'प्यार' की
मैं पहचान हूँ
इसलिए...
दूसरो से 'प्यार' करूंगा
क्योकि
'मैं' इन्सान हूँ !

मैं

पानी का बुलबुला हूँ इक
पल–भर में फूट जाऊगा
न इतने प्यार से देखो,
नजर से टूट जाऊंगा
घडी–भर जिन्दगी मेरी
मैं बरसी बूंद–सा मोती
कभी सागर में सिमटूगा
पलक से छूट जाऊगा
न इतने प्यार से देखो
नजर से टूट जाऊगा
पानी का बुलबुला हूँ इक
पल–भर मे, फूट जाऊगा
न इतने प्यार से देखो
नजर से टूट जाऊगा।

मन्नत

मुझसे भी दु:खी होगा ज्यादा,
कोई, इसका मुझे, एहसास रहे
क्यू सुख की मैं, कामना करूं?
हर पल, जब दु:ख मेरे पास रहे,
आँखे सुन्दर हो जाएं मेरी
मैं रोऊं, दर्द मिले इतना
मैं गाऊं, दर्द की आह के संग,
मेरे मन मे, दर्द–निवास रहे
मुझसे भी दु:खी होगा ज्यादा
कोई, इसका मुझे, एहसास रहे,
मुझे साथ मिले, बस पीडा का
मै दर्द की धुन पर, लहराऊं
पीडा से, प्रकाशित हो अन्तर,
मेरे मन मे, भरा उजास रहे
मुझसे भी दु:खी होगा ज्यादा
कोई, इसका मुझे, एहसास रहे।

इकतीस बरस बाद

मैं कैसा हूँ
यही बतलाने, दिखलाने, जतलाने, मनवाने
और कहलाने के लिए
करता रहा, तमाम उम्र– प्रयास
कोशिशो मे कटवा दिए
हाथ–पॉव– यहॉ तक कि गर्दन भी
कुचल दिया फूल–सा दिल, मसलकर मार डाले सब अरमान
यही सोचकर कि समझेगा कोई तो कभी मुझे
छलकेगे किसी ऑख मे, मेरे लिये भी कभी..दो ऑसू
स्नेह की गुनगुनी धूप में, खिल उठेगी
गुलाबो से भरी.. मेरी छाती
भीचकर दो बांहें मुझको,
समा लेगी सृष्टि के परम सौन्दर्य–संसार मे
पसर कर जिसमें त्याग दूगा, बडे सुख और आराम से
अपनी अंतिम सॉसें
चैन से बंद कर लूंगा आँखें
पर अफसोस, आज
'इकतीस बरस बाद' भी
इस लहूलुहान देह को, प्रतीक्षा है, किसी समझने वाले की
जो कर सके.. 'अपना है' समझकर
क्षत–विक्षत शरीर का, शव का अतिम संस्कार
और मुक्त हो सकूं मै ..
प्यार की पीडा–भरे, इस अद्‌भुत, मगर...
शाश्वत –सुदर– संसार से
खुशी–खुशी !

न जाने किसके लिये

न जाने किसके लिये
लिखता रहा, मैं
स्नेह की, प्रेम की, कोमल–मृदुल भावो–भरी
अद्भुत आकाक्षाए
गुलाब की ताजा कलियो–सी, कविताएं

न जाने किसके लिये
संजोता रहा ..मैं
उम्र–भर, अपने बाल–पन से
अनोखे–अल्हड–चचल–सुहाने–सलोने,
रेशमी ख्वाब, कुछ हसी सपने

न जाने किसके लिये
भिगोता रहा...मैं
बरसो से, अभी कुछ दिनों पहले तक
अपनी आँखें ..दर्द मे डूबी कराहे
भीड मे ढूंढते– किसी शख़्स को तलाशते हुए

न जाने.किसके लिये
बनाता रहा . मैं
बरसो, अपने हाथो से छोटा–सा घर
जिंदगी–भर...कुछ न कुछ करते हुए
तमाम मुश्किलो के बीच मे, बिखरते हुए

न जाने किसके लिये
जीता रहा . मैं,
यही सब लिखते–संजोते, बनाते और बिखरते हुए
सोच कर, हंसते हुए, रोज थोडा मरते हुए
न जाने किसके लिये।

माँ, पिता और मैं

माँ की कोख में, पिता के प्राण
पले–बढे, तब मैं बना
माँ चीखी, पापा घबराये
उस क्षण, माँ ने–जब मुझे जना
गली–मुहल्ले–भर को हो गई
मेरे जन्म की...सूचना
निर्मल था, नवजात भी था
तब मैं, चिकना ..रक्तसना
माँ की कोख मे, पिता के प्राण
पले–बढे, तब ..मैं बना
माँ थी पुलकित, पिता प्रशांत
थी राहत...एक पुत्र जना
गूंजी थी, घर मे किलकारी
गली–मुहल्ला...स्वर्ग बना
अचरज से देखती, आँखे थी
थीं, ममता–भरी, सब की बाहे
मुझे सबने, स्नेह से, जब सींचा
सब ही का प्रिय, तब मैं बना
माँ की कोख मे, पिता के प्राण
पले–बढे, तब मैं बना
दुर्दम था, एक दिन वो भी,
जब माँ रोई, पापा थे सोये
चिरनिद्रा में लीन,
अकेले, देख रहा था,
मैं बुत बना !

चार दिनों के जीवन में

ये 'स्नेह' सभी. हम .लोगो का
ये 'प्रेम', प्रमुख..सब रोगो का
सहकर. भी भूल...नही. पाते
इन चार दिनो .के .जीवन...मे,
हैं. .बार–बार.. हम.. दोहराते
हैं. बार–बार.. हम. .दोहराते

क्यूं..आस किसी की, छलती है
क्यू. प्रीत ह्रदय मे, पलती है
उत्तर ..क्यू..ढूढ.. नहीं पाते
इन. .चार दिनों के जीवन. .मे
हैं . बार–बार.. हम...दोहराते
हैं...बार–बार...हम...दोहराते

आगत का...स्वागत...करते हम
औ, विगत–विदाई...झरते हम
आखो मे अश्रु, उभर आते
इन .चार .दिनो के जीवन मे
हैं...बार–बार.. हम दोहराते
हैं ..बार–बार ..हम दोहराते

सब .घृणा–क्रोध–प्रतिरोध सहा
पर ..'प्यार', 'ह्रदय' का शोध रहा
फिर .क्यूं .नयनों . को छलकाते
इन चार दिनों के .जीवन मे
हैं...बार–बार.. हम...दोहराते
है बार–बार .हम . दोहराते ।

श्री मुकेश की कुछ कविताएं मैने सुनी, भाव उन के पास है
भाषा छंद मे कहीं कहीं आहत है। मै समझता हूँ, अपने
अध्यवसाय से ये इसे ठीक कर लेंगे, इनकी सफलता
मेरे लिए प्रीतिकर होगी।

त्रिलोचन शास्त्री

प्रिय 'मुकेश' कविता जिन्दगी में फूल की तरह
खिलती है उसे खिलने दो।

पद्मा सचदेव

'बाप पर पूत, पिता पर घोड़ा, बहुत नही तो थोडा थोड़ा
की कहावत हमारी तरफ हमेशा कही जाती रही, लेकिन मुझे
इस कहावत पर यकीन 'मुकेश' का कलाम पढ कर हुआ
पण्डित रामकिशन को तो वही जानते है, जो उनके खानदान से
वाकिफ है, मगर 'साईल देहलवी' को हर वह शख्स जानता है,
जिसे उर्दू शायरी के बारे में थोड़ी बहुत मालुमात भी है 'साईल'
मरहूम का शुमार उस्ताद शायरों में होता है, जबान और बयान पर
जिनको कुदरत हासिल थी, यह विरासत 'मुकेश' को मिली है उनकी
शायरी की ताजगी उनके शानदार मुस्तकबिल की गवाही दे रही है।
मेरी दुआए उनके और उनकी शायरी के साथ है।
'अल्लाह करे जोरे कलम और जियादा'

हसन कमाल

This is to wish Shri Mukesh Sharma all
the best for his first book of poetry.

Bhupinder singh